रूहानी सत्संग No. K-01

सन्तों के राम

1. राम राम सब को कहे, कहिये राम न होय॥
गुरु परसादी राम मन बसे, तो फल पावे कोय॥

श्री गुरु अमरदास जी तीसरी पातशाही की यह वाणी है, जिसका यह शब्द आ रहा है। परमार्थ की खोज में इनकी अपनी तलाश 70 साल की बयान की जाती है। 70 साल की आयु तक वे तलाश करते रहे। आखिर समय आया जब उन्हें श्री अंगद साहब के चरणों में जाना नसीब हुआ। उस वक्त तक जो भी साधन वह करते रहे, उनसे उनकी तसल्ली न हुई। अनुभवी महात्मा के चरणों में पहुँचे तो परमार्थ की ठीक समझ आई। फिर संसार के कल्याण के लिए खोल-खोल कर समझाया है।

फरमाते हैं, राम राम तो सारा जहान कर रहा है, खाली शब्द का उच्चारण करने से हम उस रमें हुए परमात्मा से, जिसे हम राम कहते हैं, लग तो नहीं सकते। राम कहने से हम राम को पा नहीं सकते। जैसे पानी-पानी, आब या वाटर वाटर कहने से हम पानी जो चीज़ हैं उस तक नहीं जा सकते। पानी लेने के लिए हमें कुएँ, नल या दरिया पर जाना पड़ेगा। किताबों और ग्रन्थों में पानी के फायदों का, उसके इस्तेमाल का ज़िक्र है, किताबों की हमारे दिल में पूरी कद्र है, पर उनमें उस चीज़ का केवल ज़िक्र है, किताबों को खाली पढ़ लेने से या केवल अक्षर के उच्चारण से हम पानी तक नहीं पहुँच सकते और हम उस शान्ति को, उस ठण्डक को, नहीं पा सकते जो पानी पीने से मिलती है। बड़ी साफ बात है। दुनिया भ्रम में जा रही है। यारी साहब एक महात्मा हो चुके हैं वो कहते हैं:

रसना राम कहत ते थाकी।
पानी कहत कबहूं प्यास बुझत है,
प्यास बुझत जब चाखी।

राम, अल्लाह, वाहगुरु, खुदा, वे सब उस परमात्मा के नाम ऋषियों-मुनियों-महात्माओं ने रखे हैं, इनसे चलकर हमने उस चीज़ को पाना था जिसे ये नाम ब्यान कर रहे हैं। नाम से चलकर नामी को, Name से

चलकर Named को, इस्म से चलकर मुसम्मा को पकड़ना था लेकिन हम लफ्ज़ों में जकड़-जकड़ कर मर गये। मेहनत भी की और फल भी न पाया। श्री गुरु अमरदास जी ने अनेकों जप, तप, संयम किए होंगे, उनका जीवन भी नेक पाक जीवन था। मगर सारे साधन उन्होंने किये, अकारथ गए। हकीकत की खबर तब मिली जब वे श्री गुरु अंगद साहब के चरणों में पहुँचे। गुरुबाणी में आया है कि हकीकत की खबर उस वक्त मिलेगी, सत् का पता उस वक्त लगेगा जब किसी ऐसे महापुरुष से लगोगे जो सत् का स्वरूप है।

सतुगुरु देखेया, दीखिया लीनी॥
गत मित पाई, अंतर्गत चीन्ही॥

यहां शब्द 'दीखिया' आया है। जिसे देखा नहीं उससे दीक्षा कैसी ? दीक्षा क्या है? Thought transference का अमल है। अनुभवी महापुरुष अपनी तवज्जो के उभार से आपको इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाता है। इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना, पिण्ड को छोड़ना, जब तक कोई अनुभवी पुरुष न मिले, यह काम नहीं हो सकता।

एक पाठी भाई थे। बड़ी लगन से वाणी पढ़ते थे। उनसे पूछा- ''भाईसाहब गुरुवाणी में आया है, 'नाम जपत कोटि सूर उजियारा' - अर्थात् नामके जपने से करोड़ों सूर्यो के बराबर प्रकाश होता है। आप रोज़ वाणी में यह बात पढ़ते हैं। कभी यह प्रकाश आपने भी देखा है?'' पढ़ना अच्छा है। मगर वाणी में जो लिखा है, उसे नहीं पाया, अन्तर की आँख न खुली, वह दिव्य प्रकाश, वह Light of God न देखी, न वह ध्वनि सुनी जो हर वक्त अन्तर में हो रही है, तो फिर ईश्वर पर तुम्हारे विश्वास का, तुम्हारी आस्तिकता का आधार क्या है ? तुम खड़े कहां हो? इस तरह चाहे लाख बार पढ़ो, तुम्हारी अविद्या तो नहीं जाएगी।

गुरु हजारों मील दूर बैठा हो फिर भी वह तजरबा देने की सामर्थ्य रखता है। याद रखो सतगुरु शरीर नहीं। वह शरीर के पोल पर काम करता है। जैसे देवी का मन्त्र सिद्ध करने से देवी प्रकट हो जाती है, वैसे ही गुरु पावर शिष्य में काम करती है। यह एक तरह की Obsession होती है, ऐसे महात्मा से दीक्षित होने वाला हजारों मील दूर बैठा हो तो

भी उसे तजरबा (अनुभव) मिलेगा। बिजली की रफ्तार (गति) बहुत तेज है, प्राणों की रफ्तार और भी ज्यादा तेज है। सुरत की रफ्तार प्राणों से भी ज्यादा तेज है। सत्गुरु अपनी पावर से, सामर्थ्य से शिष्य को परिचय (अनुभव) देता है, उसको तजरबा कराता है। गुरु की हैसियत को लोगों ने गलत समझा है। जो यह समर्था नहीं रखते वे गुरु पद के अधिकारी नहीं। वैसे आज बट्टा उठाओ तो गुरु मिलता है। मगर इनमें सच्चे गुरु कितने हैं?

सो फरमाते हैं श्री गुरु अमरदास जी कि राम-राम तो सारा जहान कहता है मगर खाली राम राम कहने से कोई राम तक पहुँच नहीं सकता। आगे साधन बताते हैं:

2. गुरु परसादी राम मन बसै, तां फल पावै कोय॥

यदि गुरु कृपा से वह रमा हुआ परमात्मा मन में बस जाए अर्थात् प्रकट हो जाए, तब राम-राम कहने का फल पाओगे। पानी कहने से कोई पानी नहीं पीता, पानी के रस का अनुभव वही करेगा जिसने चखा हो, जिसने पानी पिया ही नहीं उसे क्या पता कि पानी का स्वाद क्या है? फरमाते हैं, कोई अनुभवी पुरुष यानी गुरु कृपा करे तब राम राम कहने का पूरा फल मिलता है। अनुभवी पुरुष कौन है? जिसकी आत्मा मालिक से जुड़कर एक हो गई, जो तन मन से आज़ाद होकर मालिक से अभेद हो गया वही अनुभवी पुरुष है, उसी का नाम गुरु है। जो आप जुड़ा हुआ है मालिक से, वह दूसरे को भी जोड़ सकता है। गुरु देहधारी है भी और नहीं भी। देह का सिर्फ पोल है जिस पर वह काम करता है। मगर उसमें वह ईश्वरीय सत्ता, वह रब्बी ताकत, वह Divine Power (दैविक पावर) काम करती है। दुनिया इस बारे में बड़ी भूल में पड़ी हुई है। पूर्ण पुरुष जब भी संसार में आए उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि मैं गुरु हूं। वे यही कहते रहे कि कोई और ताकत कोई और पावर मुझमें काम कर रही है। वे उस पावर के Mouthpiece (मुख) उस ताकत के पोल बने।

भाई लालो को सम्बोधित करके श्री गुरु नानक साहब कहते हैं कि यह मैं नहीं बोल रहा। मुझमें वह मालिक बोल रहा है। एक और जगह कहा है:

नानक दास बुलाया बोले॥

मेरा मालिक जो कहलवाता है वही मैं कह रहा हूँ। जिनके अन्तर में यह अहसास, यह अनुभव जाग उठा कि कोई और ऊँची ताकत, कोई और Higher (ऊंची) पावर मेरे अन्तर में काम कर रही है, मैं नहीं कर रहा, ऐसे महापुरुष जब बात करते हैं, तो वे बुद्धि विचार का सहारा नहीं लेते। जैसे अन्तर की धारा आती है, उसी प्रवाह में वे बोलते चले जाते हैं। वे कुदरती Impulse (तरंग) के, अंतर की धारा के सहारे बात करते हैं। विद्वान बात करता है तो वह बुद्धि विचार की सहायता लेता है।

गुफताए ऊ गुफताए अल्लाह बवद।
गरचे अज़ हलकूमे अब्दुल्लाह बवद।

उसका कहा हुआ परमात्मा का कहा हुआ है अगरचे (चाहे) आवाज़ इंसानी गले से आ रही है।

सो फरमाते हैं श्री गुरु अमरदास जी कि ऐसा पूर्ण पुरुष कृपा करे और उस Higher (ऊंची) पावर का Contact (संपर्क) दे दे अर्थात् उससे हमें जोड़ दे तो वह राम, जिसे यह केवल शब्दों द्वारा बखान कर रहा है, इसे घट-घट में रमी हुई उस राम पावर का अनुभव हो जाये।

राम के समझने में भी कई तरह के विचार हैं। संतों ने इस विषय को भी खोल कर साफ कर दिया है ताकि इस बारे में किसी किस्म की कोई गलतफहमी बाकी न रहे। कबीर साहब कहते हैंः

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट-घट में पैठा।
एक राम का सकल पसारा, एक राम इन सबते न्यारा॥

एक राम तो राजा दशरथ के बेटे भगवान राम चन्द्र जी महाराज चौदह कला सम्पूर्ण अवतार हुए हैं। धर्मियों को उभारने और पापियों तथा अधर्मियों को दंड देने के लिए उन्होंने अवतार धारण किया। समय की जरूरत को पूरा किया और चले गये। एक राम जो घट-घट में बैठा है - यह हमारा मन Negative Power (नकारात्मक पावर) काल शक्ति का प्रतिनिधि है। तीसरे वह ताकत है, जो तीनों लोकों की Controlling Power (नियंत्रक पावर) अर्थात् त्रिलोकी नाथ है। वह जिसका यह सब फैलाव हो रहा है और एक राम वह है जो इन सबसे न्यारा है और इन सबको आधार दे रहा है। वह संतों का राम है।

सन्तों ने हर चीज़ की वही कीमत डाली जो उसकी असल कीमत है। कमांडर-इन-चीफ (सेनापति) और वायसराय एक ही हकूमत के कारिन्दे हैं, दोनों बादशाह से ताकत लेते हैं। ताकत एक है मगर काम दो हैं। इन दोनों की Appointment करने वाला, इन्हें पदवी देने वाला बादशाह ही है मगर इनका काम अपना अपना है। झगड़े-फसाद के समय Civil (सिविल) के अफसर शहर का बंदोबस्त Military (सेना) के हवाले कर देते हैं। मिलीटरी की आज्ञा बिना कोई घर से बाहर नहीं निकल सकता परन्तु सिविल के अफसर का परवाना जिसके पास हो उस पर पाबन्दी नहीं। वह जब चाहे, जहाँ चाहे चला जाए, कोई उसे रोकता नहीं। एक ही ताकत दोनों जगह काम कर रही है पर काम अलग-अलग है। जैसे बिजली कहीं आग जलाती है और कहीं वही बिजली बर्फ जमाती है मगर बिजली की Power (शक्ति) तो एक ही है। इसी तरह सृष्टि को आधार देने वाली वह करण कारण ताकत एक ही है। जब जब धर्म की ग्लानि होती है तब तब धर्मियों को उबारने और संसार का कष्ट दूर करने के लिए अवतार दुनिया में आते हैं। किसी भी अवतार की वाणी पढ़ लो उनके मिशन (काम) के बारे में यही ब्यान मिलेगा।

सन्तों का काम इनसे अलग है। उनके पीछे भी वही ताकत है जो सब को आधार दे रही है मगर उनका काम और है। यह जो हमारी आत्मा या सुरत है यह परमात्मा की अंश है। आत्मा मन-इन्द्रियों के घाट पर बाहर फैल रही है और अपने आप को भूल गई है। हरेक के साथ मन लगा हुआ है जो काल शक्ति (Negative Power) का एजेंट है। वह इसे (आत्मा को) हमेशा बाहर फैलाव में लगाए रखता है। सन्तों का काम है आत्मा को मन इन्द्रियों की कैद से आज़ाद कराना, उसे अपने आप का अनुभव कराना और फिर परमात्मा से जोड़ना, यह है सन्तों का काम। अवतार धर्मियों को उभार कर अधर्मियों को दण्ड देकर संसार की बिगड़ी व्यवस्था को ठीक करने आते हैं ताकि यह दुनिया आबाद रहे। सन्त रूहों को, आत्माओं को, मन-इन्द्रियों की कैद से आज़ाद करके एक तरह से दुनिया को उजाड़ने के लिए आते हैं। मन इन्द्रियों से आज़ाद होकर जो आत्मा प्रभु में लीन हो गई वह आवागमन में क्यों आएगी? तुलसी साहब फरमाते हैं:

राम कृष्ण ते को बड़ो, तिन भी तो गुरु कीन।
तीन लोक के नायका, गुरु आगे आधीन॥

भगवान राम और भगवान कृष्ण से कौन बड़ा होगा? उन्होंने भी तो गुरु धारण किया। त्रिलोकीनाथ होते हुए भी गुरु के आगे उन्होंने शीश झुकाया। क्यों? आत्मविद्या के लिए ! अवतारों ने भी सन्तों की महिमा गाई है। उन्हें भी सन्तों की खुशी मन्जूर रही है। रामायण को हम किस्सा कहानी समझ कर पढ़ लेते हैं। जरा ध्यान से पढ़िए तो हकीकत मालूम हो। तुलसीकृत रामायण के बाल काण्ड और उत्तर काण्ड में निरोल (खालिस) परमार्थ की चर्चा है।

कहने का मतलब सिर्फ यह है कि अवतार और सन्त दोनों एक ही Source (स्रोत) से आए, दोनों ताकतों का स्रोत एक है। ताकत एक है मगर काम अलग हैं। जैसे बिजली की ताकत एक है मगर वह कहीं आग जलाती है, कहीं बर्फ जमाती है। इसी तरह दुनिया के लिए राम शब्द का जो अर्थ है, उसमें और सन्तों के राम में बड़ा फर्क है। आम दुनिया के लिए राम का मतलब है, चौदह कला सम्पूर्ण भगवान राम। इसकी भी हकीकत मालूम करनी हो कि वह क्या थे, क्या नहीं थे तो घट रामायण पढ़िये, उस में इस मजमून को खोलकर समझाया है। तुलसी साहब फरमाते हैं, ''पहली बार मैंने रामायण लिखी तो कुनीन को खांड में लपेटकर दुनिया के सामने पेश किया मगर दुनिया उसे किस्सा कहानी समझकर उसी में उलझ कर रह गई। अब खोलकर मैं सारा विषय स्पष्ट करता हूँ। सो घट रामायण में उन्होंने रामायण की पूरी व्याख्या की है और बताया है कि दशरथ का अर्थ है दस इन्द्रियों वाला (पांच कर्म इन्द्रियाँ, पांच ज्ञान इन्द्रियाँ), रथ हमारा यह शरीर, जिसमें इन्द्री रूपी दस घोड़े जुते हैं। लक्ष्मण है यह हमारा पिण्डी मन। रामायण में जहां कोई झगड़ा हुआ वह लक्ष्मण से ही शुरू हुआ। घर से निकले। भरत बड़े प्यार से मिलने आए। लक्ष्मण धनुष-बाण लेकर खड़े हो गए। परशुराम से झगड़े तो लक्ष्मण। सरूपनखा से झगड़ा हुआ तो लक्ष्मण के कारण। यह सारी कथा अलंकार में है। पुराने ग्रन्थों में हर चीज़ को अलंकार में वर्णन करने की प्रथा मिलती है। पार्वती का उदाहरण ले लो। पार्वती अर्थात् पर्वत पर

रहने वाली। कौन सा पर्वत है वह? वह पर्वत यह शरीर है। इसके ऊपर उसका निवास है। पार्वती कहती है:

लाख जनम तक रगड़ हमारी। वरूं शम्भू नहिं तो रहूं कँवारी॥

जो खाली किस्से कहानियों में रह गए वे रह गए । जो रम्ज़ की (भेद की) बात पा गए, वे हकीकत को समझा गए। महात्माओं के जीवन में अक्सर आया है कि वे राम भक्त थे। इष्ट की पूजा पहला कदम है परन्तु जो आगे निकल जाता है वह निकल जाता है। मीराबाई भगवान कृष्ण की पुजारिन थी। आगे चलकर रविदास मिले जिन्हें मीराबाई ने सत्गुरु रविदास कहा है।

यहाँ छोटाई बड़ाई से गरज़ नहीं। जो उस रमी हुई ताकत से लगे, अवतार उनकी इज्जत करते रहे। वेद-शास्त्र, धर्म-ग्रन्थ सभी उनकी महिमा गाते रहे। तुलसीकृत रामायण में सारे मज़मून को बड़ी खूबसूरती से ब्यान किया गया है। राजा का, प्रजा का धर्म क्या है? शिष्य का कर्तव्य क्या है? पुत्र का धर्म क्या है? और आगे परमार्थ के भी इशारे दिए हैं, उनकी तह तक जाओ। ज्यादा व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं। जो खाली इष्ट पर रह गया वह रह गया। हमें उसके आधार पर जाना है। गुरु भक्ति में वह आधार मिलता है। गुरु क्या कहता है? वह पहले दिन Higher Power (ऊँची पावर) का Contact (संपर्क) हमें देता है, अन्तर में उससे हमें जोड़ देता है। वह कहता है, "मैं भी शरीर नहीं, तू भी शरीर नहीं, चल अन्तर।"

सो गुरु अमरदासजी फ़रमाते हैं कि खाली राम-राम कहने से तुम उस हक़ीकत तक नहीं पहुँच सकते। जिस हक़ीकत का यह नाम है जब तक उस हक़ीकत से नहीं लगोगे तो राम राम कहने का पूरा फल नहीं पाओगे।

अवतारों के जीवन में कई मौके आए जब उन्होंने हक़ीकत की तरफ ले जाने वाले इशारे दिए हैं। भगवान राम और कृष्ण की शारीरिक क्रियाओं के बारे में सभी जानते हैं। वह सारा इतिहास हमारे सामने हैं। राम का राजतिलक, चौदह वर्ष का बनवास, लंका विजय इत्यादि यह इतिहास सभी जानते हैं? हमारी गरज उन नुकतों से है जो उन्होंने रूहानियत अर्थात्

आत्मज्ञान के बारे में दिये। भगवान कृष्ण एक जगह अर्जुन से कहते हैं, "मेरे उस रूप का ध्यान करो जो अपार और अनन्त है।" परम हंस स्वामी रामकृष्ण ने भी इसके इशारे दिए है। मैं एक बार यहां रामाकृष्ण मिशन में प्रवचन करने गया। वहाँ कई साधु मौजूद थे। मैंने पूछा, "श्री रामाकृष्णा माता के पुजारी थे, लेकिन उन्होंने जो फरमाया है आप लोगों ने भी कभी इस पर भी विचार किया है कि, "मैंने माता से प्रार्थना की कि वह मुझे आगे जाने दे। उसने आज्ञा दी तो मैं आगे गया।" वे बोले यह बात आपने बताई तो हमारी समझ में आई। हमने पहले कभी इस बात को सोचा ही नहीं।

हक़ीकत के इशारे तो हर जगह मौजूद हैं। मैं यह सब कुछ इसलिए अर्ज कर रहा हूँ कि हक़ीकत के इशारे अवतारों ने भी दिए हैं। कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, "यदि तुम परमार्थ को पाना चाहते हो तो किसी आत्म-तत्व-दर्शी महात्मा के पास जाओ जिसने अन्तर में परमात्मा के दर्शन किए हों।" फिर गीता के छठे और आठवें अध्याय में इशारा किया है कि दो भ्रूमध्य नासिका के अग्रभाग (सीध में) आत्मा का निज स्थान है जो अन्तर में जाने का रास्ता है और फिर किसी गुरु के पास जाने का आदेश दिया है।

सन्तों के दिल में सबके लिए इज़्ज़त है पर उनका अपना मार्ग है। वे बिगड़े हुए हालात को तलवार से ठीक नहीं करते वे तो अपने ऊपर सहते रहे। दूसरों की गरदन की अपेक्षा उन्होंने अपनी गरदनें कटवा दीं। आत्मा को मन की कैद से आज़ाद कराना और परमात्मा से जोड़ना, यह उनका काम है। राम से सन्तों का अभिप्राय वह रमी हुई ताकत है जो सबको बनाने वाली है और जो सबको आधार दे रही है। वह नाम पावर जो कण-कण में समा रही है। तुलसीकृत रामायण में राम और नाम का मुकाबला करके बड़ी खूबी से नाम की बढ़ाई की गई है। बड़ा लम्बा ब्यान है जिसके अन्त में तुलसीदास कहते हैं:

कहूँ कहा लग नाम बड़ाई। राम न सकत नाम गुण गाई॥

भगवान राम भी उस लाब्यान ताकत (ब्यान में न आने वाली अकथ सत्ता) की अंश थे। वह बनाने वाली ताकत उनके भी पैदा करने वाली

थी। "पिता का जन्म क्या जाने पूत।" बच्च माता को क्या ब्यान करेगा? कहने का मतलब सिर्फ इतना है कि सन्तों के राम और आम दुनिया के राम में बड़ा फर्क है। तो फ़रमाते हैं श्री गुरु अमरदास जी कि वह राम सबको आधार दे रहा है, उस के खाली अक्षरी नाम के उच्चारण से पूर्ण शान्ति नहीं मिलेगी। किसी अनुभवी पुरुष से उसका Contact (संपर्क) लेकर उससे जुड़ो तभी शान्ति मिलेगी। जैसे नशई जिसने नशा पीया हो वह नशे वाली चीज़ का नाम ले तो उसके अन्दर नशे का अनुभव जाग उठता है। लेकिन जिसने नशा पीया ही नहीं उसे क्या खबर ? हम सुबह से शाम तक राम-राम कहते हैं, मगर दिल पर असर नहीं होता। हमारी जबान थक जाती है पर दिल नहीं भीगता क्योंकि हम राम पावर से लगे नहीं, न उसका रस लिया है। अगर हम उस Power (शक्ति) से जुड़ें तो रस भी मिले और नाम लेने से कशिश भी पैदा हो।

नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात।

उसमें निजानन्द है, सरूर है, हमेशा रहने वाली एक मस्ती है। एक ऐसा रस है उसमें जिसे पाकर जन्म-जन्म के संस्कार धोए जाते हैं, एक ऐसी महवियत (तन्मयता) है जिसमें दुनिया भूल जाती है, मगर जब तक किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से वह अन्तर में प्रकट न हो, केवल अक्षरी नाम रटने से यह लाभ नहीं होता।

3. अन्तर गोविन्द जिस लागै प्रीत। अन्तर गोविन्द जिस लागै प्रीत॥

4. हर तिस कदे न वीसरै। हर हर करे सदा मन चीत॥

गोविन्द यानी सारी सृष्टि को Control (नियन्त्रण) करने वाला उसका कत्ता-धर्त्ता है। जिसे गुरु कृपा से राम ताकत का Contact (संपर्क) मिल जाये, उसका रस आने गले, उसे प्यार भी लग जाएगा। प्यार पैदा होने की निशानी क्या है? जिसका रस मिले उसी से प्यार होगा। आम खाया, उसका रस पाया, उसका प्यार भी पैदा होगा। कुदरती बात है। परमात्मा परिपूर्ण का रस जिसको आए उसे प्यार होगा और नाम को तो महारस करके ब्यान किया है। गुरु अर्जुन साहब फ़रमाते हैं:

बिखे बन फीका त्याग री सखिये, नाम महारस पियो॥

जब अन्तर्मुख आत्मा मन-इन्द्रियों से आज़ाद होकर नाम का रस लेने

लगे तो बाहर के सारे रस फीके पड़ जाते हैं। हमारी आत्मा मन-इन्द्रियों की कैद से आज़ाद नहीं हुई तो वह रस कहां से आए? उसका ताल्लुक नहीं मिलता जब तक इन्द्रियों से ऊपर न आओ। जब तक अनुभवी पुरुष न मिले इन्द्रियों से ऊपर नहीं आ सकते।

जिसके अन्तर में गुरु कृपा से राम मन में बस गया और हरि से प्यार हो गया, उसकी निशानी क्या है? उसे हरि कभी नहीं भूलता। जिसका रस न लिया हो वह कैसे याद आए? जो चीज़ कभी खाई हो वह बार-बार याद आती है। गुरु कृपा से नाम का रस आने लगा। जिसका रस आए उससे प्रीति लगेगी। जिससे प्रीति लगी हो वह कभी भूलता नहीं। चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते जागते हर वक्त उसकी याद रहती है। लड़की की शादी हो जाये, वह ससुराल से मायके आ जाये तो उसकी वृत्ति वहीं पति में लगी रहती है। जो अन्तर में उसका रस लेता है, जिसके अन्तर में उसका प्यार है वह बाहर क्यों जाएगा? वह प्रभु को कभी नहीं भूलेगा। जिसके अंतर में लगातार याद है उसकी, वह उसका रस भी लेता है। उस रस का दाता गुरु है। इस बात की समझ कब आई गुरु अमरदास जी को? जब वह गुरु अंगद साहब के चरणों में पहुंचे।

वाणियां हम सिर्फ पढ़ लेते हैं, उन्हें समझते नहीं। एक बात भी समझ आ जाए तो जीवन पलटा खा जाए। अक्षरी नामों को खाली रटने से हम उस हक़ीकत को नहीं पा सकते, उस ताकत से नहीं जुड़ सकते जिसको वह सारे नाम ब्यान करते हैं। गुरु कृपा से अन्तर में राम पावर का ताल्लुक (सम्बन्ध) मिले तो उसका रस आए। जिसका रस मिले उससे प्यार भी होगा।

मनुष्य जन्म बड़े भाग्य से मिलता है। वे लोग खुश किस्मत है जिन्हें अनुभवी पुरुष के दर्शन नसीब हुए। वह रास्ता दे दे, और तजरबा (अनुभव) करा दे तो फिर उस तजरबे को रोज अभ्यास करके और बढ़ाओ। बाहर दुनिया के काम गुजारे मात्र रखो। सोते-जागते, चलते-फिरते, नाम का रस लेते रहो। आहें भी निकलें तुम्हारे अन्तर से तो वे उस प्रभु की आहें हो।

आम लोग अव्वल तो परमात्मा को याद ही नहीं करते, किताबों के पढ़ने से थोड़ा बहुत शौक भी लगता है तो वह टूट जाता है। भई याद

आपको कैसे आए? हम लोग जो अनुभवी पुरुष के चरणों में जाते हैं और जिन्हें वहां से रास्ता मिल चुका है, फिर भी इन्द्रियों के रसों में डूबे हुए हैं, यह और बात है कि सिर पर अनुभवी पुरुष का हाथ है। वह एक जन्म नहीं, दूसरे जन्म में ले जाएगा। भई उधार क्यों रखते हो? अभी निबेड़ा क्यों नहीं कर लेते? अगर करने लग जाएं तो कभी छोड़े नहीं लेकिन हम करते नहीं। महज (केवल) ज़बानी जमा खर्च में लगे रहते हैं, माफ करना, हम नास्तिकों से भी बुरे हो जाते हैं। नास्तिक ने तो देखा ही नहीं, उसे खबर ही नहीं। जिसे रास्ता मिला, उसने देखा है। तजरबा हासिल किया है, चाहे थोड़ा ही सही। गुरुकृपा से जो तजरबा मिला है, उसे और बढ़ाओ। हज़ूर स्वामी जी महाराज (स्वामी शिवदयाल सिंह जी महाराज) ने ऐसे साधनों के लिए बड़ी पते की बात कही है:

हट रहो खास और आम से।

इधर-उधर फज़ूल समय गँवाने की बजाए इस रस को बढ़ाओ। जब दिल में उसकी याद बस गई तो फिर उसे कौन निकालेगा ? फिर मजे से दुनिया में रहो। कइयों को थोड़ा बहुत रस भी आता है। लोगों में आदर मान होने लगता है। वे मुँह से कुछ नहीं कहते। अपनी बढ़ाई सुन-सुन के सिर मारते हैं, नतीजा यह कि सारे किए कराए पर पानी फिर जाता है। यह खतरनाक रास्ता है। खतरनाक है भी और नहीं भी। अपने जीवन की पड़ताल रखो तो पता लगे। हम तो शुतरे बेमुहार (बे नकेल के ऊंट) की तरह भटकते फिरते हैं। अपनी रहनी पर नज़र मारो। देखो, तुम्हारे जीवन में क्या तबदीली (परिवर्तन) हुई है, तुम्हारे अन्दर क्या Change (परिवर्तन) हुआ है?

इस शब्द में जो हालत ब्यान की गई है, वह उनकी गति है जिन्होंने हरि का रस पा लिया। बात बड़ी साफ है। मैं इस लिए खोलकर ब्यान कर रहा हूँ कि आम शिकायत सुनने में आती है कि हमारा कुछ बना नहीं। इसलिए पहली बात यह है कि डायरी रखो, अपने जीवन पर कड़ी नज़र रखो। अपनी बुराइयों का हिसाब रखो। चुनकर बुराइयों को दूर करने की कोशिश करते रहो। हम लोग गुरु का कहना तो किनारे रख देते हैं, मन का कहना करते हैं।

"सतगुर बचन बचन है सतगुर।"

हम लोग सत्गुरु को तो माथा टेकते हैं, मगर उनके वचनों को नहीं। हज़ार माथे टेकते रहे, सत्गुरु के वचनों पर फूल न चढ़ाए, उनका कहना नहीं माना तो कल्याण नहीं होगा। पुराने और नये भाई जिन्हें ऐसे महापुरुषों के चरणों में जाने और उपदेश लेने का मौका नसीब हो चुका है, कान खोलकर सुन लें। मैंने इसलिए माथा टेकने की रस्म उड़ा दी है। खाली हाथ जोड़ना काफी है। मगर जो बात कही जाए उस पर अमल करो। जो अमल कर रहे हैं वे बाकायदा अपनी डायरी भेज रहे हैं। जो नहीं करते वे डायरी भी नहीं रखते। सत्संग शौक उभारने के लिए, याददहानी कराने के लिए ठीक है, लेकिन ज़रूरत अमल की है। An ounce of practice is worth more than tons of theory.

यह करनी का भेद है, नाहिं बुद्धि विचार।
कथनी छांडि करनी करो, तो पावो कुछ सार॥

मैं साफ लफ्ज़ों में बार-बार ताकीद कर रहा हूं। मैंने कहा था अभ्यास में कमी हो तो फौरन आओ। महीने भर की रिपोर्ट दो। बच्चा काम करके आए तो पिता को खुशी होती है। बड़ा कीमती वक्त है यह, इसे व्यर्थ न गंवाओ। यह मनुष्य जन्म बड़े भाग्य में मिला है।

5. रिदै जिनके कपट बसे, बाहरों सन्त कहाए॥

6. तृष्णा मूल न चुकई, अन्त गये पछताए॥

जिन के अन्तर में कपट बस रहा है, बाहर से कुछ, अन्दर से कुछ, वे अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारते हैं। महात्मा पर्दापोश होता है, वह सब कुछ देखता है मगर पर्दा नहीं उठाता। बाहर से कहता है, हां भई, अच्छा भई, लेकिन वह सब कुछ जानता है, हज़ूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) फरमाया करते थे, जिस तरह शीशे की बोतल में पड़ा हुआ अचार या मुरब्बा साफ नज़र आ जाता है, इसी तरह सन्त जीवन के अन्तर की गति देख लेते हैं मगर वे ज़ाहिर नहीं करते। हम लोग उस से पर्दा करते हैं। हमारे दिलों में कुछ और है, जबान पर कुछ और। यही कारण है कि बहुत नजदीक रहने वाले भी खाली रह जाते हैं। हज़ूर फरमाते थे, बछड़ा दूर से आता है और दूध पी जाता है और चिच्चड़ थनों से लगे

रहते हैं और ख़ून चूसते रहते हैं। यहां नजदीकी दूरी का सवाल नहीं, दिल की सफाई का सवाल है।

जिन के अन्तर में कपट बस रहा है, बड़ी-बड़ी कथायें करते हैं Acting Posing से काम लेते हैं, वे लोगों के सामने कुछ भी बन जायें, उनके अन्तर की तृष्णा न गई तो अन्त समय हाथ मल-मल कर पछताना पड़ेगा। सारी उम्र लोगों को खुश करता रहा, लोगों की बढ़ाई लेता रहा। मगर अन्त समय कोई साथी नहीं बनता। सन्तों के दरबार में दोरंगे लोगों के लिए कोई जगह नहीं है। ख्वाजा हाफिज़ फरमाते हैंः

'ई कारे यकरंगा बबद।"

यह यकरंगों का काम है। जिनका अन्तर बाहर एक है, जो मन में है वही ज़बान पर, केवल ऐसे लोग यहाँ सफल होते हैं। श्री गुरु अमरदास जी ये सब बातें क्यों ब्यान कर रहे हैं? यह उनके 70 साल के जीवन के अनुभव का निचोड़ है। हमारी क्या गति है? हम सोचते हैं यह दूसरों के लिए कहा जा रहा है, वह जो अन्तर मैं बैठा हमारी हर बात को देख रहा है, हम उससे धोखा कर रहे हैं। जिस का दिल और ज़बान एक है उसे परमात्मा ज़रूर मिलेगा, इस बात पर पूरा यकीन रखिये।

घर ही बैठे शौह मिले, जे नीयत रास करे॥

उसे पाने के लिए कहीं जाने की ज़रूरत नहीं, वह तो तुम्हारे अन्तर में हैं। केवल नीयत साफ होनी चाहिए। अन्तर तृष्णा की आग जल रही हो, दिल में नफ़रत और धड़ेबन्दी हो, बाहर से वे कितने महात्मा बनते फिरें, आखिर कब तक छिपे रहेंगे? असलियत एक दिन जाहिर होकर रहेगी। ऐसे लोग अपना जीवन तो बरबाद करके रहेंगे ही, उनके साथ लगने वालों के जीवन पर भी बुरा असर पड़ेगा। इन्सान का सबसे बड़ा आदर्श है, अपने आपको जानना और परमात्मा को पाना, बाल-बच्चे, धन, दौलत, जायदादें सब यहीं रह जायेंगी। इन्हीं में उलझ के न रह जाओं। अरे भाई, चौबीस घण्टों में से चार घंटे भजन के लिए भी वक्त निकालो। यहाँ कितने हैं जो छाती पर हाथ रखकर कह सकते हैं कि हम भजन में पूरा वक्त देते हैं? यह मैं इसलिए खोल कर ब्यान कर रहा हूं कि आम शिकायत सुनने में आती है कि हमारा कुछ बना नहीं।

दुनिया में रहो मगर दुनिया के होकर न रहो अगर उस रस को पाना है। रस होगा तो प्यार होगा। प्यार होगा तो लगातार याद दिल में बस जाएगी। एक में रंग गए तो बाहर के रंग फीके पड़ जायेंगे। साफ और सहल रास्ता है लेकिन जितना सहल है उतना हम इसे उलझा लेते हैं। लोग कहते हैं हमारा प्यार कैसे बने ? भाई गुरु का कहना मानो। नाम से लगो, अपने आप दुनिया फीकी पड़ जाएगी। वहाँ मुलम्मा (दिखावा) काम नहीं देता। दुनिया में मुलम्मा थोड़ी देर काम देता है। वह भी आखिर ज़ाहिर हो जाता है। हम गुरु को सर्वज्ञ नहीं जानते, नहीं तो उससे चोरी की हमें हिम्मत कैसे होती?

मेरे अपने जीवन की घटना है। बड़ी भारी मुखालिफत होने लगी मेरी। लोगों को फैज (परमार्थ का लाभ) मिलने लगा तो कुछ लोगों को डर पैदा हो गया कि जाने अब क्या हो जाएगा। वे बड़े ज़ोरों से मुखालिफत (विरोध) करने लगे। मैं जानता था कि पूरा गुरु अन्तर मैं बैठा हर चीज़ देख रहा है। सिख (शिष्य) का जीवन आधार गुरु है। जिसका जीवन आधार गुरु को छोड़ कोई और बन गया, वह रह गया। गुरु गुरु है। हाँ, तो हज़ूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) के पास रोज़ शिकायतें पहुँचती। एक बार हज़ूर ने मेरे भाई से फरमाया, "इस शख्स के सिर से नेजों पानी गुज़र गया लेकिन एक बार भी इसने मेरे पास आकर अपनी ज़बान से नहीं कहा कि बात यों नहीं यों है।"

मैंने भाई के कहने पर पांच मिनट के लिए वक्त मांगा और हज़ूर के सामने जाकर अर्ज़ किया हज़ूर मैं आपके पास इसलिए नहीं आया कि अपनी सफाई पेश करूँ। मैंने इसिलए इस बात की ज़रूरत नहीं समझी, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि आप मेरे अन्तर में बैठे हुए हर बात को देख रहे हैं। इस वक्त जो मैं कर रहा हूं या सोच रहा हूं, वह भी, और आगे भी जो Trend (रुख) है, वह भी आप देख रहे हैं। तो फिर मेरे लिए कुछ कहने की गुंजाईश ही कहां रही?

गुरु के सामने यकसू (एकाग्रचित्त) होकर बैठो। उसकी बात गौर से सुनो। गुरु जो बात कहता है वह सारे वेदों, पोथियों और ग्रन्थों का निचोड़ है। वह हमारी हर बात देखता है। अगर हम गुरु को हाज़िर नाज़िर

(सर्वव्यापी, सर्वदृष्टा) समझें तो हमारा जीवन पलटा खा जाए। हज़ूर फरमाते थे कि पांच वर्ष का बच्चा भी सामने बैठा हो तो हम गुनाह नहीं करते। गुरु को हाज़िर नाज़िर समझें तो फिर कपट कहां रहा?

परमार्थ सहल से सहल है और मुश्किल से मुश्किल भी है। यह इल्म का, चातुरी का विषय नहीं। यह करनी का, अमल का विषय है। अमल नहीं तो इसकी गति रावण की तरह है जो चार वेद, छह शास्त्रों का ज्ञाता था मगर उसने वह गलती की जिससे उसके सिर पर गधे का सिर लगाया जाता है। तुलसी साहब जो कहते हैंः

चार अठारह नौ पढ़े, खट पढ़ खोया मूल।
सुरत शब्द चीन्हे बिना, ज्यूं पंछी चंडूल॥

चार वेद, अठारह पुराण, नौ व्याकरण, छह शास्त्र ये सब पढ़ लो, पर जो अपनी आत्मा को नहीं जाना और नाम से नहीं लगे तो यह सारा पढ़ना पढ़ाना ऐसे है जैसे चंडूल पक्षी की बोली जो हर जानवर की बोली की नकल उतार देता है। जिनके हृदय साफ नहीं, उनकी गति नहीं होगी। महात्मा लिहाज़ नहीं करते, वह बात कहने में लाग-लपेट नहीं रखते।

7. अनेक तीरथ जे जतन करै। तां अन्तर की हौंमे कदे न जाए॥

महात्माओं की वाणियों में उनके जीवन की झलक होती है। वे जो कुछ कहते हैं वह उनके जीवन का सार, Review (समीक्षा) होता है। श्री गुरु अमरदास जी 70 वर्ष की उम्र तक तीर्थों पर जाते रहे। वे फरमाते हैं, सारे तीर्थों पर भ्रमण कर आओ मगर इससे हौंमे, अहंकार की भावना (मैं पना) नहीं जाएगी। हौंमें (अहंभावना) न गई तो आना-जाना बना रहेगा।

जब लग एह जाने मैं किछ करता॥ तब लग गर्भ जून में फिरता॥

जब अन्तर में अनुभव जाग उठे कि मैं नहीं कर रहा कोई और कर रहा है तो फिर वह Conscious Coworker of God बन जाता है (अर्थात् उसमें मालिक की सत्ता काम करती है।

हम करते हैं मन की मौज और कहते हैं यह उसकी मौज है। जब तक अन्तर में यह अनुभव नहीं जागता उस उक्त तक किसी आँख वाले का सहारा ले लो, जिसके अन्तर में यह अनुभव जाग उठा है। ऐसे गुरु का कहना मानो। अगर किसी अन्धे का सहारा लोगे तो वह भी गिरेगा और

उसके साथ तुम भी गिरोगे। 'Blind leads the blind, both fall into the ditch. "अन्धा अन्धे का सहारा लेकर चला, दोनों खाई में जा पड़े।"

8. जिस नर की दुविधा न जाए, धर्मराय तिस दे सजाए॥

दुविधा कहते हैं दो विधि को, यह भी हो जाये, वह भी हो जाये। हमारे अन्तर में कोई एक Ruling Passion (प्रबल इच्छा) नहीं। हम बह रहे हैं। अच्छों की संगति अच्छे हो गये और बुरों की संगत में बुरे बन गये। अपनी आँखों से काम न लिया। एक आदमी ने कोई राय दी, बाकी सबने गर्दन हिला दी। आँख बन्द करके उसके पीछे चल पड़े। याद रखो जहाँ कशमकश है, धड़ेबन्दी है, एक से नफ़रत दूसरे प्यार, वहाँ कभी न आँख ही खुली और न दुविधा ही गई। दुविधा जब तक है आना-जाना बना रहेगा। नाम का बीज अब आपके अन्तर में डाला गया है, अगर इससे लगो तो मुक्ति, न लगो तो जाने दो जन्म, चार जन्म तक, कब रास्ता तय हो। यह आशिकों का, प्रेमियों का, रास्ता है। अभी से क्यों न तय कर लो। इन्तज़ार क्यों करो। बड़े भाग्य से यह मनुष्य जन्म मिला है। फिर या नसीब कब यह मौका हाथ जाए।

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आये एहला जन्म गंवाया॥

इन्द्रियों के यह साज-सामान बनते भी रहे, बिगड़ते भी रहे। महल में रहे तो क्या, और बाहर तख्ते पर सो रहे तो क्या। सुन्दर वस्त्र पहने तो क्या और फटे पुराने कपड़ों में गुज़ारा किया तो क्या ! सवाल तो अन्तर की हालत का है।

बसता टूटी झोपड़ी चीर सब छिन्नी।
जात न पात न आदरो, उद्यान भरमिन्ना॥
मित्र न इष्ट, धन रूप हीन, कुछ साक न सिन्ना।
राजा सगली सृष्टि का, हर नाम मन भिन्ना ॥
तिस की धूड़ मन उधरे, प्रभ होय सो प्रसिन्ना।

"टूटी हुई झोपड़ी में जो रहता है, कपड़े जिसके फटे हुए हैं, दुनियादारें में जिसकी इज़्ज़त नहीं, ऊँची जिसकी जात नहीं, पास धन-दौलत जायदा भी नहीं, न कोई संगी साथी और न मित्र है दुनिया में। लेकिन जिसका मन नाम के रस में भीगा हुआ है वह सारी सृष्टि का राजा है। उसके

चरणों में जाने से मन को नई ज़िन्दगी मिलती है, उसकी खुशी प्रभु की खुशी है।''

यह अवस्था उनकी है जो नाम से लगे हुए हैं। श्री गुरु नानक देव जी के जीवन का वाक्या है। एक बार फरमाया, ''मैं चाहूँ तो आग के कपड़े पहन लूँ, पहाड़ों की रोटी बना दूं।'' यह सब उसी की, सत्नाम की, बरकत है भई। दुनिया तो यही कुछ चाहती है। दुनिया जो मत्थे टेकती फिरती है तो गर्ज़ सिर्फ इतनी है। दस पांच हज़ार रुपये मिल जाएं। आत्मा की शान्ति हो न हो। श्री गुरु अमरदास जी अपने 70 बरस के तजरबे का निचोड़ ब्यान कर रहे हैं। यह शब्द तो हमने कई बार पढ़ा होगा मगर मतलब समझ कर हृदय में बस जाये तो जीवन पलटा खा जाए।

9. कर्म होवै सोई जन पावै, गुरुमुख बूझे कोई॥

इस गति को कौन पा सकता है? मालिक जिस पर दया करे उसे वह सत्गुरु से मिलाता है। कर्म हो, अच्छे भाग्य हो तो वह गुरुमुख बनता है। गुरुमुख की तारीफ की है:

'जो गुरु सेती सन्मुख होय।'

जिसका मुँह हमेशा गुरु के सामने है। हमारा मुँह क्या गुरु के सामने है? हमें तो दुनिया भाती है। जो गुरु का मुख बन गया, जो अपने आप को भूल गया, उसके अन्तर में गुरु बोलता है। यहां मनमुखों का काम नहीं। मनमुख वह है जो मन का कहा मानता है। गुरु मिलने पर भी कई लोग मनमुख रहते हैं। श्री गुरु अमरदास जी ने आगे इस का और निर्णय किया है:

से मनमुख जो शब्द न विचारें। गुरु की भय की सार न जाणें॥

गुरु मिला, उससे नाम का ताल्लुक (संपर्क) मिला, यह पहला कदम है। गुरु भी मिला परन्तु यह उसे सर्वज्ञ नहीं मानता, उसका डर नहीं इसके मन में। ऐसे लोग गुरु मिलने पर भी मनमुख हैं। यहाँ जो दिल और ज़बान के साफ हैं, उनका बेड़ा पार है। हज़ूर एक दृष्टान्त सुनाया करते थे, एक चोर किसी माहत्मा की कुटिया में उनकी सुन्दर घोड़ी चुराने आया। वह घोड़ी को आगे से खोले तो वह पीछे से बंध जाये, पीछे से खोले तो आगे से बंध जाए। सारी रात वह उसी उधेड़बुन में लगा रहा। दो तीन

बजे रात को महात्मा उठे। बोले, कौन है? चोर ने कहा मैं चोर हूं।" उन्होंने पूछा, "यहाँ क्या कर रहे हो?" चोर बोला, "मैं घोड़ी चुराने आया था, सारी रात लगा रहा, आगे से खोलता हूँ तो पिछाड़ी बंध जाती है, पीछे से खोलता हूँ तो आगे से बंध जाती है।" महात्मा चोर की साफगोई (स्पष्टवादिता) पर खुश हुए। बोले, "जा, यह घोड़ी तुझे दी"। इतने में सुबह हो गई। एक रोज पहले दूर के रहने वाले कुछ तालिबों (शिष्यों) ने अर्ज की थी कि हमारे इलाके में कोई कुतुब (प्रचारक) भेज दीजिए सत्संग के लिए। महात्मा ने कहा था कि कल दे देंगे। अब वे लोग हैरान थे कि कल कहां से भेज देंगे कुतुब? आपस में सब एक दूसरे की गति को जानते थे, कि कौन कितने पानी में है। अगले रोज़ वे आए तो महात्मा ने चोर की तरफ इशारा किया कि यह है कुतुब। इसे ले जाओ और उसी घोड़ी पर उसे भेज दिया। जो चोर अपने आपको चोर कहे, उसका यहाँ बेड़ा पार है। जो अन्तर से कुछ है बाहर कुछ, वह खाली रह जाता है। महात्मा को साफगोई पसन्द है। साफदिली, साफगोई पहला कदम है। भरोसा न भी हो तो साफगोई पहला कदम है। भरोसा न भी हो तो साफगोई से कल्याण हो जाता है। आखिर चोर को महात्मा पर कब भरोसा था? महात्मा के पास जब भी जाओ, यक्सूई से (एकाग्रचित्त) बैठो, चुपचाप ध्यान से उसकी बात सुनो। सत्संग करो तो इस तरह कि तुम हो या वह, तीसरा कोई न हो। हमें सत्संग करना भी नहीं आता।

10. नानक विच्चों हौंमे मारे तां हर भेटे सोई॥

हरि कब मिलता है? जब आपभाव न रहे। जब तक हौंमे अर्थात् 'मैं पना' मौजूद है, जब तक यह अनुभव पैदा नहीं हुआ कि मैं नहीं, कोई और ताकत काम कर रही है, जब तक यह Conscious Coworker of God नहीं बनता हरि का मिलाप नहीं होता। यह अवस्था किसी अनुभवी पुरुष की दया से नसीब होती है। अक्षरों से नाम पावर के साथ हम लग नहीं सकते। जिससे लगे नहीं और उस का रस नहीं लिया उसका प्यार कहाँ? प्यार हो तो हर वक्त उसकी याद रहेगी। जहाँ उसकी याद के सिवाय और कुछ न हो वहाँ कुदरती तौर पर साफदिली और साफगोई (मन वचन की शुद्धता) होगी। ऐसों का बाहर और अन्तर एक होगा। अब सवाल पैदा होता है कि यह अवस्था कहां से मिले?

1. ना काशी मत उपजे, ना काशी मत जाए॥

2. सतगुरु मिलिये मत उपजै, ताँ एह सोझी पाए॥

आम लोगों का ख्याल है कि तीर्थ को हाथ लगाने से पाप उतर जाते हैं। तीर्थ को खाली हाथ लगाने से न अन्तर की आँख खुलती है न ही भ्रम जाता है। तीर्थ स्थान क्यों बने ? तीर्थों की History (इतिहास) देख लो। कोई न कोई महात्मा वहाँ बैठा और प्रभु की तरफ चला। जहां वह पैदा हुआ वह धरती तीर्थ बन गई। अब वहाँ जाने से उस महात्मा की याद पैदा हो, जिस रास्ते पर चलकर उसने प्रभु को पाया, उसकी खोज लगे, तब तो तीर्थ पर जाने से कोई फायदा भी है। खाली हाथ लगाने से क्या फायदा? जहाँ सत्गुरु बैठा है वह जगह तीर्थ है। महात्मा तीर्थों के मुहताज नहीं होते, तीर्थ उनके मुहताज हैं। जहाँ-जहाँ उनके चरण पड़े वे सारे स्थान तीर्थ बन गये। गुरु नानक साहब तलवंडी आए, वहाँ तीर्थ बन गया। गुरु अंगद साहब खडूर साहब चले गये, गुरु अमरदास जी गोइंदवाल चले गये। यह चीज़ (परमार्थ की दौलत) किसी जगह बंधी नहीं रहती, जहाँ दिया जले वहाँ रोशनी देगा, चाहे वह तेली के घर जले या चमार के। गुरु अमरदास जी गद्दी-पत्ती के लोभियों से तंग आकर गोइंदवाल चले गये। गुरु अंगद साहब के साहबजादे उनके पीछे वहाँ चले गए। उन्हें लात मारकर गिया दिया। गुरु अमरदासजी बोले, "मेरा शरीर वज्र के समान है, आप को कष्ट हुआ होगा।" गुरु रामदास जी पांव पड़े, फिर भी विरोधी विरोध से बाज न आए। वह गोइंदवाल से चले गए। सारा सामान बंधा बंधाया छोड़कर वहां से चले गये। घर में गद्दी बनाने के इच्छुक ऐसे लोगों की हमेशा मुखालिफत (विरोध) करते हैं।

सो फरमाते हैं गुरु अमरदास जी कि जो परमात्मा में अभेद हो चुका, जो सत का स्वरूप हो गया, उसके पास जाने से ही हकीकत की सूझत आएगी, वह तुम्हें हकीकत का तजरबा (अनुभव) देगा। कितनी साफ तालीम है। तीर्थ काबिले इज़्ज़त (सम्मान योग्य) हैं, अगर वहां जाने से पूर्ण पुरुष की याद दिल में पैदा हो। जहाँ अनुभवी पुरुष मिले वहाँ जाओ। अगर अनुभवी पुरुष मिल जाए और यह नाम से जुड़ जाए तो मुबारिक,

वरना खाली हाथ आए खाली हाथ चले गए। यहां तीर्थों या धर्मस्थानों को Under-Rate (उनका मान घटाने) करने का हमारा मकसद (उद्देश्य) नहीं। यह गलतफहमी दिलों में लेकर न जाओ। जिन्होंने किसी कामिल महात्मा को देखा है, पूर्ण पुरुष के दर्शन किए हैं, उनके लिए तो महापुरुषों की याद कुछ मतलब रखती है। जिसने किसी महापुरुष को देखा ही नहीं उसे क्या खबर?

लैला का कदम जिस धरती पड़ा पड़ा, मजनूं ने उस मिट्टी पर सिजदे किए (माथा रगड़ा)। हकीकत की सूझत गुरु से ही मिलती है। आमिल (अनुभवी) चोला छोड़ गए। अभ्यास में कोई गलती रह गई तो उसके स्थान पर जाकर खाली हाथ लगाने से तो गलती दूर नहीं होगी। जहां किसी आमिल भाई को देखो उसके पास जाओ। जाओ, देखो, कहां से दुनिया को फैज (परमार्थ का ज्ञान) मिल रहा है? अगर वहां लोगों को फैज मिल रहा है तो तुम्हारी गलती भी दूर होगी। सन्तमत का बुनियादी असूल है कि अपनी आँखों से देखो, अपने कानों से सुनो-

जब लग न देखूं अपनी नैनी। तब लग न पतीजू गुरु की बैनी॥

जहाँ जहाँ महात्मा रहे, वे स्थान तीर्थ बन गए। वैसे परमात्मा हर जगह मौजूद है।

एह जग सच्चे की है कोठरी सच्चे का विच वास॥

पर जब तक वह परमात्मा न मिले, किसी अनुभवी के चरणों में बैठो। वह सबसे बड़ा तीर्थ है।

3. हर हर कथा तू सुण रे मन शब्द मन बसाए।

हरि की कथा जो घट-घट में हर वक्त हो रही है उसे मन में बसा ले, उसे प्रकट कर ले। वह अखंड कीर्तन जो हर वक्त हो रहा है, उसमें मन को लगाओ, यह सत्गुरु का उपदेश है। वह किताबों में नहीं फंसाता, न बाहर तीर्थों में। वह कहता है चलो अन्तर जहाँ अखंड कीर्तन हो रहा है।

अखंड कीर्तन तिन भोजन चूरा॥ कहु नानक जांके सतगुरु पूरा॥

गुरु की तारीफ भी गुरुबाणी में इस तरह की है:

सो गुरु करो जो साच दृड़ावै, अकथ कथावै शब्द मिलावै।

गुरु वह है जो हकीकत को मन में बसा दे, वह अकथ कथा, आकाश वाणी, बेहरफ कलाम, शब्द, ध्वनि, नाद, श्रुति जो घट-घट में हो रही है उसका अन्तर में ताल्लुक दे दे। गुरु की तारीफः

साध हमारे सब बड़े अपनी अपनी ठौर।
शब्द पारखू जो होए सो माथे सिर मोर॥

हज़ूर स्वामी जी महाराज फरमाते हैंः

शब्द मार्गी गुरु न होवे, तो झूठी गुरुवाई लेवे।

जिनके अन्दर यह समर्था नहीं वे गुरु कहलाने के कहदार नहीं। ऐसे लोगों के यहाँ धड़ेबन्दी के अड्डे बन जाते हैं, जिसके अन्तर में Higher Power (ऊँची पावर) का, परमात्मा का अहसास (अनुभव) जागता है, वह अपने को सारी दुनिया का सेवक समझता है।

4. ए मत तेरी थिर रहै, तां भरम विच्चों जाए॥

फरमाते हैं कि यदि तेरी यह मति स्थिर हो जाये तो तू हर चीज़ को अपने असली रंग में देखेगा। अन्तर की आँख खुल गई, रूह (आत्मा) पिंड को छोड़कर ऊपर आ गई तो हर चीज़ उसको अपने असली रंग में और अपनी सही कीमत में नज़र आने लगती है। शरीर से ऊपर आ गए तो सारा भ्रम जाता रहा।

5. हर चरण रिदै बसाए तूं किलविख होवैं नास॥

हरि के चरण क्या? शब्द का, जो घट घट में मौजूद है, उसका Lowest link (सबसे निचला सिरा), उसके साथ लगने से पाप नाश हो जाते हैं। पाप कहाँ से आते हैं? इन्द्रियों के घाट से इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ गए तो पाप कहाँ?

6. पंच भू आतमा वस करै, तां तीर्थ करै निवास॥

पांच इन्द्रियों को काबू कर लोगे तो आत्म तीर्थ में निवास करोगे, जहाँ प्रकाश भी है और हर वक्त ध्वनि भी हो रही है। बाहर के तीर्थ पहला कदम है। गुरु अमरदास जी 70 साल तक तीर्थों में जाते रहे। अब खोल कर समझा रहे हैं कि यह तीर्थ कहाँ है, जहाँ जाकर जन्म मरण खत्म होता है, पापों का नाश होता है। पहले जहां कहीं सत्गुरु मिले, वहाँ जाओ, पहाड़ों में मिले, बियाबानों में मिले, शहर में मिले, जंगल

में मिले, जहाँ भी वह मिले, वहीं जाओ। सत्गुरु क्या कहता है? वह कहता है तू भी शरीर नहीं, मैं भी शरीर नहीं, चल अन्तर में।

दस इन्द्रे जो राखे वास, तास के आत्मे होये प्रगास॥

कितना साफ और स्पष्ट कर दिया है मज़मून को। जो दस इन्द्रियों को वश में रखेगा, बाहर के भोगों-रसों में लम्पट होने से रोकेगा, उसके अन्तर में प्रकाश हो जाएगा। गुरु साहिबों की तालीम को मानने वाले आज जाने कैसे बाहरमुखी हुए बैठे हैं? मालिक के आशिकों को दुनिया की हवस (इच्छा) क्या? गुरु रामदास जी फरमाते हैं, अगर पहाड़ों का सारा सोना और समुद्रों के सारे हीरे जवाहरात इकट्ठे करके ढेर लगा दिया जाये और हरि भक्त से कहा जाये कि हरि रस के बदले में यह सारा धन ले ले तो वह इस दौलत को आँख उठाकर भी नहीं देखेगा।'' ~~महात्मा क्यों बनी बनाई जगह को छोड़कर देस बदल देते हैं? वे कहते हैं कि यह बाहर की चीज़ें बाहर ही रह जायेगी, वह इन्हें बाहर ही हाथ जोड़ देते हैं।~~

7. मनमुख एह मन मुगध है सोझी किछु न पाए॥

जो इस मन के दांव में आ गए, उन्हें हकीकत की सूझत नहीं मिलती। यह मन अव्वल तो अनुभवी पुरुष के पास जाने ही नहीं देता, सौ हीले करता है कि रास्ते ही में रुक जाए। वहाँ पहुँच गए तो भी बात नहीं सुनने देता, सत्गुरु भी मिला तो फायदा नहीं उठाने देता। हम यह कड़ी पढ़-पढ़ के खुश होते रहेः

कहु नानक जिन को सत्गुरु मिलेया, तिनका लेखा निबड़ेया॥

मगर सत्गुरु का मिलना सही मायनों में कब होता है? गुरुबाणी में आया हैः

गुरु मिला तब जाणिये जब मिटे मोह तन ताप॥

जिसे अन्तर में सत्गुरु मिला उसकी यह निशानी है। बाहर मिलने का फायदा भी तब है जब उसके किले में रहो, हर वक्त गुरु का हाथ तुम्हारे सिर पर रहे। आदमी गिर-गिर कर ही सवार बनता है। मगर जो लम्बा पड़ा है, जो यत्न ही नहीं करता, उसका क्या बनेगा? To fall in sin is manly, but to die in it is sinful.

गुरु अमरदास जी , फरमाते हैं:

हम नीच ते उत्तम भये भई, जब ते गुरुमत बुध पाई॥

कि कभी हम इन्द्रियों के घाट पर डूब रहे थे। सत्गुरु ने हमें वहाँ से निकाला। जीवों के कल्याण का यह कानून परम्परा से चला आ रहा है, न बदला है न बदलेगा। हज़ूर फरमाते थे, "वह Unwritten Law (बिना लिखा कानून) है Unspoken Language (न बोले जाने वाली बोली) है, उनका ब्यान सादा मगर बात बड़ी गहरी होती थी। थोड़े से शब्दों में बहुत बड़ी बात कह जाते थे। यह उन्हीं की बातों का विस्तार है। उनके चरणों में बैठकर मुझे जो समझ आई वही अर्ज़ कर रहा हूँ।

8. हर का नाम न बुझई, अन्त गया पछताए॥

जिसे हकीकत की सूझत न मिली उसे आखिर में पछताना पड़ता है। जब सब कुछ छोड़ना पड़ता है उस वक्त होश आती है। जिसके लिए यह गुरु को, ईश्वर को भूल जाता है वह दुनिया इसके साथ नहीं जाती। उस वक्त जब सब साथ छोड़ देते हैं वह (गुरु) सिर पर आन खड़ा होता है। बताओ कितना भारी एहसान है उसका। उसकी ज़ाती गरज़ (निज का स्वार्थ) क्या है इसमें? वह हमारी भलाई के लिए हमें नसीहत (उपदेश) करता है।

9. एह मन काशी सब तीरथ सिम्रित सतगुरु दिया बुझाए॥

सत्गुरु मिले, हकीकत की सूझ दी, मन की हालत बदली। यही ग्रन्थ-पोथियों के पढ़ने का, यही तीर्थ पर जाने का, यही जप तप का उद्देश्य था। यही मन विषय विकार से रहित होकर तीर्थ स्थान बन गया। मन की मैल सद्गुरु के मिलने से जाती है और जब तक मन मैला है सब कुछ मैला है।

मन मैले ता सब किछ मैला, तन धोते मन हछा न होय॥

अगर काल भगवान कृपा करे तो यह इस तरफ आए। वह भी बहुत बड़ी ताकत है। हम बाहरमुखी साधन करते रहे, हमने मन को नहीं खोजा।

10. अठ सठ तीर्थ तिस संग रहै, जिन एह रिदै रहया समाए॥

जिनके अन्तर में नाम प्रकट हो गया, उसमें सारे तीर्थ आ गए। भारत में कुल 68 तीर्थ माने गये हैं। फरमाते हैं जिसकी अंतरात्मा नाम से लग

गई, वह 68 तीर्थों की यात्रा का फल पा गया। बताओ नाम की महिमा वाला तीर्थों का मुहताज क्यों होगा? जिसने तीर्थ बनाये वह उसके हृदय में बसता है। तीर्थ बनाने वाली ताकत उसमें काम कर रही है। वह चलता-फिरता तीर्थ है। वह मुजस्सम परमात्मा है, चलता फिरता ईश्वर है। वह Polarised God है, अर्थात् वह पोल है, जिसमें ईश्वर की सत्ता का विकास हो रहा है। यह एहसास, यह सूझ किनको है? जिनकी आँखें खुली हैं। जो दुनिया से डरते हैं, वह भी कहते हैंः

मरदाने खुदा खुदा न बाशंद। लेकिन जे खुदा जुदा न बाशंद।

"परमात्मा के प्यारे परमात्मा नहीं होते, पर वे परमात्मा से जुदा भी नहीं होते।" बात तो वही है। इधर से न पकड़ा उधर से पकड़ लिया। जो लाधड़क हैं, कहीकत को यों ब्यान करते हैंः

मन खुदारा आशकारा दीदा अम। दर सूरते इन्सां खुदारा दीदा अम॥

"मैंने परमात्मा को इन आँखों से देखा है, इन्सानी शक्ल में खुदा को चलते-फिरते देखा है।"

साईं बुल्ले शाह फरमाते हैं, अपने गुरु शाह इनायत के बारे में, "मौला आदमी बन आया।"

गुरु अर्जुन साहब पांचवी पातशाही, चौथी पातशाही गुरु रामदास जी के बारे में फरमाते हैंः

हर जीयो नाम परयो रामदास॥

ऐसे महापुरुष न मिलें तो हमें परमात्मा की सूझत कैसे आए? हज़ूर स्वामी जी महाराज एक जगह फरमाते हैं, "सन्त जन खुदा के पैदा करने वाले होते हैं।" पैदा, फ़ारसी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है ज़ाहिर करने वाला, प्रकट करने वाला। गुरु उस मालिक के इज़हार की जगह है, वह पोल है जिसमें कुल मालिक प्रकाशमान हो रहा है। वह न हो तो मालिक का इज़हार कैसे हो और हमें उसकी सूझत कैसे आए?

11. नानक सद्गुरु मिलिए हुकम बूझेया, एक वसेया मन आए॥

12. जो तुझ भावै सब सच है, सचै रहे समाए॥

आखिर में गुरु अमरदास जी फरमाते हैं, सतगुरु के मिलने से यह गति हमें हासिल हुई कि वह एक ताकत, जो सबकी मूल आधार है, हमारे

अन्तर में बस गई। ये अहंकार के वचन नहीं, यह इकरार है प्राप्ति का। सद्गुरु की महिमा का, जिसके मिलने से यह गति उनको हासिल हुई। आप करो तो आप भी इस गति को प्राप्त कर सकते हैं।

सत्गुरु की महिमा सभी महात्माओं ने की है। वह राम परिपूर्ण, वह God in action Power, नाद, कलमा, शब्द, आकाशवाणी, उदगीत, श्रुति, Word - वह एक, जिसका बोध कराने वाले ये अनेकों नाम हैं, ये सारे नाम मुबारिक हैं मगर नामों से चलकर हमें नामी से लगना है, उस चीज़ से लगना है जिसका बोध ये नाम कराते हैं। जो उससे जुड़ा है वह हमें भी जोड़ सकता है, उसका कोई नाम रख लो। उसे साधु कहो, सन्त कहो, अनुभवी कहो, आमिल कहो। ऐसे अनुभवी एक हों हजार हों, जितने ज्यादा हों अच्छा है मगर ऐसे महारुपुरुष हमेशा कमयाब रहे हैं, पहले भी और अब भी। भगवान राम के जमाने में जब हिन्दुस्तान में रूहानियत (आत्मज्ञान) उन्नति की चोटी पर समझी जाती थी, सारे हिन्दुस्तान में एक अष्टवक्र ऐसे महात्मा निकले जिन्होंने राजा जनक को ज्ञान दिया।

तीर्थों पर जाओ, वहां जाकर किसी अनुभवी महात्मा को खोजो। मगर तीर्थ स्थानों पर अब मठ बन गए हैं। मैं हरिद्वार की हर की पौड़ी पर गया और वहाँ सत्संग किया। वहाँ पर जो कथा के Incharge (इंचार्ज) थे उन्होंने अपनी कथा बन्द कर दी ताकि उनकी संगत को भी सत्संग सुनने का मौका मिले। मैंने कहा यहाँ गुरु नानक साहब आए। गुरु अमरदास जी 70 वर्ष की आयु तक यहाँ आते रहे। आज उसी जगह पर मुझे कहना पड़ता है कि ये जो सारे काम आप कर रहे हैं वे सब अपराविद्या के साधन हैं। दीये जगाओ, और दूसरे साधन भी शौक से करो। अपराविद्या की भी ज़रूरत है। मगर यह बाहर की जोत, ये मन्दिरों के घण्टे, अन्तर की ध्वनि और प्रकाश के प्रतीक हैं। उस हकीकत को (तत्व) को पाने की कोशिश करो जिसकी ये चीज़ें निशानदेही कर रही है। जिस तरह लड़कियाँ गुड़ियों का खेल खेलती हैं, गुड्डे गुड्डी का ब्याह रचाती है लेकिन अपनी शादी के बाद ये सारे खेल छूट जाते हैं; बाहर की रस्में, समाज के नियम, शरीयत (सदाचार) के कायदे कानून, इन सब का उद्देश्य केवल यह था और है कि मनुष्य नेक पाक जीवन व्यतीत करे।

आदमी आदमी के काम आए, हर आदमी सदाचारी हो, यह परमार्थ के लिए काम आए, हर आदमी सदाचारी हो। यह परमार्थ के लिए ज़मीन की तैयारी है। आगे अनुभवी पुरुष के पास जाकर ही रास्ता मिलेगा, जन्म-मरण का सौदा वहीं चुकेगा। यही असल ईसाईयत है, यही असल हिन्दुत्व, यही असल मुसलमानी, यही असल सिक्खी है।

किसी समाज या शरीयत में रहो, तुम्हें मुबारिक। अपनी अपनी समाज में रहो, उस समाज के नियम पालन करो ताकि जीवन यात्रा आराम से गुज़रे पर वहाँ रहते हुए हक़ीकत को भी पाने का यत्न करो जो मनुष्य जीवन का आदर्श है। अगर रस्मों-रिवाज़ों की जकड़ों में और बाहरी शक्लों पर रह गए तो रह गए। मनुष्य जन्म का फल तभी है अगर मालिक मिले। वह मालिक जिसका कोई नाम नहीं, लेनिक अनेकों नाम उसका बोध कराने के लिए ऋषियों, मुनियों और महात्माओं ने रखे हैं, उस से जोड़ने वाला अनुभवी महात्मा मिल जाये तो जीव का कल्याण हो जाता है।

जिनको ऐसा महात्मा नहीं मिला उन्होंने तो खैर देखा ही नहीं, उन्हें खबर ही नहीं। ज़्यादा अफसोर उन पर है जिन्हें गुरु मिला लेकिन वे फिर भी मन के कहे पर चल रहे हैं। गुरु ने दवा दी, उन्होंने दवा खाई नहीं उठाकर ताक (अलमारी में) पर रख दी, फायदा कैसे हो? हज़ूर का कलाम मुख्तसर (संक्षिप्त) होता था मगर वे थोड़े लफ्ज़ों में बहुत बड़ी पते की बात कह जाते थे। जुलाब की गोली कोई गलती से भी खा ले तो वह काम करती है।

लाहौर का वाकेया है। मैं सत्संग कर रहा था, एक नास्तिक भाई वहाँ आए। सत्संग सुना और बाद में वक्त भी लिया। बाद में मेरे पास आ बैठे। कहने लगे, "मुझे इजाज़त दो अखबारों में लिख दूँ। मैं चालीस साल से नास्तिक चला आ रहा हूँ आज एक सत्संग से मैं नास्तिक से आस्तिक बन गया हूँ। "मैने कहा ऐसा न करो। पहले करो और देखो। बाद में उस आदमी का हमेशा का कायदा रहा कि जहाँ कहीं उससे सामना होता वह जूते उतार कर खड़ा हो जाता।

सन्तों की फिलासफी हमेशा एक रही है। वे जब भी दुनिया में आते रहे, रूहानियत को ताज़ा करते रहे। उनके जाने के बाद दुनिया वह सबक भूलती रही, वे आते रहे और उस सबक को ताज़ा करते रहे। सब महात्मा

एक ही बात कह रहे हैं। भगवान कृष्ण के जीवन का एक वाकेया है जिसका ब्यान अलंकार रूप में आया है। वाकेया यह है कि भगवान् कृष्ण ने यमुना में छलांग लगाई जहाँ हज़ार मुँह वाला सांप था। वह बाँसुरी बजाते हुए उस हज़ार मुँह वाले सांप के सिर पर नाचे। वह हज़ार मुँह वाला सांप क्या है? यही हमारा मन, जो हज़ार तरीके से हमें डसता है और यह नाम की ध्वनि के बगैर काबू नहीं आता।

जिसे पाना है पाओ, झगड़ों में न जाओ। एक आर्य समाजी भाई से बात हुई, उसका कहना था कि ब्रह्म से आगे कुछ नहीं। मैंने कहा शास्त्रों में पारब्रह्म का इशारा है, मगर आप नहीं मानते तो खैर कोई बात नहीं, ब्रह्म तक ही चलो, वहाँ तक तो तुम्हारा हमारा रास्ता एक है, आगे कुछ हुआ तो चल पड़ना, नहीं तो तुम्हारी मंजिल तो पूरी हुई।

ये झगड़े उन लोगों में होते हैं जो करनी नहीं करते, कथनी में लगे रहते हैं। हम पिंड से निकलते नहीं, शरीर से ऊपर आकर हकीकत को देखते नहीं, शरीर में बैठे हुए उस अकथ अपार हकीकत के बारे में अन्दाज़ा लगाते रहते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि हमें कुछ भी हासिल नहीं होता, खाली रह जाते हैं।

गुरु अमरदास जी का यह उपदेश किसके लिए है? किसी विशेष समाज के लिए नहीं, किसी विशेष जाति के लिए नहीं, यह उपदेश मनुष्यमात्र के लिए है, सब आत्मा देहधारियों के लिए है और सबके लिए उनका उपदेश एक ही है।

महापुरुख साखी बोलदे, सांझी सगल जहाने॥

एक ही उपदेश है जो परम्परा से चला आता है। दुनिया उसे भूल जाती है तो कोई अनुभवी पुरुष आकर उस उपदेश को ताज़ा कर देता है। किसी बात का सही जवाब एक ही हो सकता है दो नहीं। हकीकत भी एक ही है, वह दो हुई न होगी।

सत्संग बचन खाली सुनने से कोई फायदा नहीं, इस उपदेश को धारण करने, इसे जीवन का हिस्सा बनाने की ज़रूरत है, तभी कल्याण होगा।

◆◆◆◆◆